

समाज विकासमाला

हरिद्वार

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ८२

हरिद्वार

एक महान तीर्थ का परिचय

●

लेखक
विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

●

सम्पादक
यशपाल जैन

●

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में यदि सरकार की ओर से कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान रखी गई है, विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम होती हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

हरिद्वार हमारे देश का बहुत बड़ा तीर्थ है। उत्तराखण्ड की यात्रा का वह द्वार है। देश के कोने-कोने से लोग वहां आते हैं और वहां की शोभा को देखकर बहुत ही प्रसन्न होते हैं। इस स्थान की धार्मिक मानता भी इतनी है कि अलग-अलग जातियों और धर्मों के लोग बड़ी श्रद्धा से वहां आते हैं और गंगाजी में स्नान करके और वहां के मंदिरों के दर्शन करके अपने जीवन को धन्य मानते हैं।

हरिद्वार से ऋषिकेश, बदरीनाथ, केदारनाथ आदि बहुत-से तीर्थों को रास्ता जाता है, आने-जाने वाले यात्रियों का वहां तांता लगा रहता है।

आशा है, पाठकों को इस पुस्तक से इस तीर्थ की अच्छी जानकारी मिल जायगी। वहां जाने की प्रेरणा भी मिलेगी।

—सम्पादक

हरिद्वार

उस दिन न तेज गरमी थी और न कड़ा जाड़ा। मौसम बड़ा सुहावना था। चौपाल के आगे बरगद का पेड़ था। उसकी डालियों को छूती हुई ठंडी हवा चल रही थी, सबको बड़ी प्यारी लग रही थी।

चौपाल में गांव के कुछ बड़े-बूढ़े, जवान और बच्चे जमा थे। कुछ लोग आनेवाले थे। जो आ गये थे वे हरिमोहन की बाट देख रहे थे। हरिमोहन ने ही उन सब को चौपाल में जमा होने का न्यौता दिया था।

भूरे चौधरी ने हुक्के में दम मारते हुए कहा, "ज्वालानाथ, तुम बड़े अच्छे रहे। दोनों मानस एक साथ हरिद्वार स्नान कर आये।"

अतरू चौधरी ने खिलखिलाकर कहा, "अरे, चौधरी यह कब जानेवाला था। इसे तो इसकी बहू खींचकर ले गई। यह तो उसके ही सहारे हरिद्वार नहा आया, वरना यह कब घर से निकलता है!"

भूरे चौधरी कहने लगे, "भैया, अच्छा हुआ, इसके घर से निकलने पर हम सबको दावत तो मिल गई।"

ये सब बातें हो ही रही थीं कि इतने में हरिमोहन भी वहां आ पहुंचा। सबने उसे प्यार के साथ अपने पास बैठ जाने को कहा। वह चबूतरे के एक सिरे की तरफ मूढ़े पर बैठ गया। और लोग खाटों पर बैठे थे। बाद में आनेवालों में कुछ नीचे भी बैठते जाते थे।



सब लोग बड़े ध्यान से यात्रा का हाल सुन रहे हैं।

भूरे चौधरी ने हरिमोहन से कहा, "अच्छा, लल्ला, पहले तुम गंगा-स्नान की बात सुनाओ। तुमने अपने दादा ज्वालानाथ को कैसे-कैसे स्नान कराया ?"

हरिमोहन ने कहा, "गंगा-दशहरे के दिन हमारी गाड़ी सुबह पांच बजे हरिद्वार स्टेशन पहुंच गई।

हमारे पास कोई खास सामान तो था नहीं। मामूली ओढ़ने-बिछाने और खाने-पीने की चीजें थीं। इसलिए हम सब स्टेशन से पैदल ही गंगा-घाट की ओर चल दिये। रास्ते में बार-बार पंडे पूछते थे---कौन जिले से आये हो, महाराज ? हमने उनकी किसी बात का कोई उत्तर न दिया। कुछ ही देर में हम हरिद्वार के उस घाट पर पहुंच गये, जिसे 'हर की पौड़ी' कहते हैं। वहां हमने अपना सब सामान एक घाटवाले के पास रख दिया। फिर गंगाजी में नहाने चले।"

अतरू चौधरी ने हुक्के में दम लगाते हुए पूछा, "भैया, तुमने तो अपने दादा को खूब मलमलकर नहलाया होगा !"

भूरे चौधरी ने मजाक करते हुए कहा, "अरे, इसने तो अपनी ताई की भी खूब खातिर की होगी !"

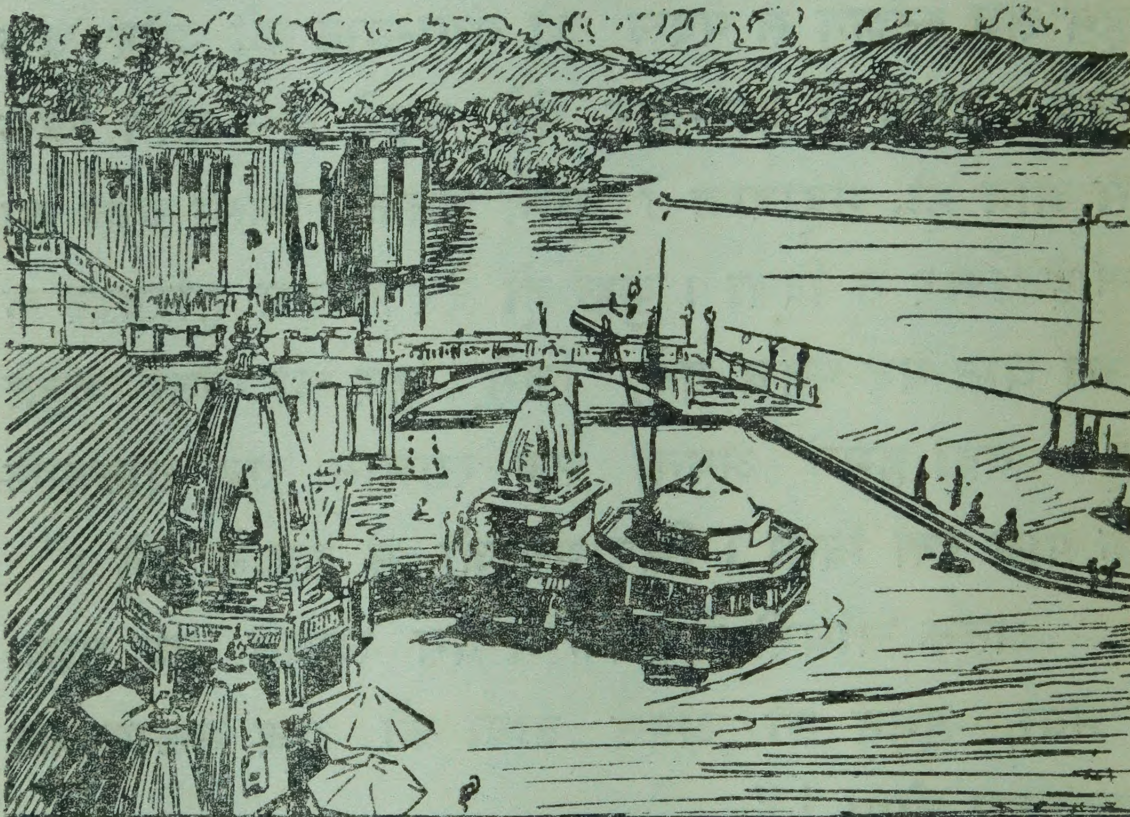
दो-तीन बुजुर्गों ने हरिमोहन की भलमनसाहत की तारीफ करते हुए कहा, "लड़का भला है। यह तो दोनों को ही अच्छी तरह से स्नान कराके लाया है।"

भूरे चौधरी ने पूछा, "अच्छा भैया ! फिर क्या हुआ ? स्नान करके तुम कहां-कहां गये ?"

हरिमोहन ने अपनी कथा को आगे बढ़ाया---

"हर की पौड़ी के पास ही स्नान करके हमने

कपड़े बदले। फिर घाटवाले ने चंदन लगाया। दादी ने गंगा में फूल चढ़ाये। इसके बाद हम सबने एक



हरि की पौड़ी

दूसरे घाट पर बैठकर भोजन किया। वहां से हम सब एक धर्मशाला में आये।

भूरे चौधरी ने पूछा, "धर्मशाला में तो कहते हैं कि ठहरने को जगह ही नहीं मिलती ?"

हरिमोहन ने कहा, "नहीं, ऐसी बात नहीं है। हरिद्वार में पचासों धर्मशालाएं हैं। उनमें हजारों यात्री ठहरते हैं। जो यात्री पहले आजाते हैं, उनको कुछ अच्छी जगह मिल जाती है और जो देर से आते हैं,

उन्हें कुछ कठिनाई उठानी पड़ती है।"

भूरे चौधरी ने कहा, "अच्छा भाई, अब तुम हमको हरिद्वार नगरी की कथा सुनाओ।"

लक्खू दादा ने कहा, "अरे भूरे, पहले गंगामाई की कथा तो सुन ले। गंगामाई के कारन तो दुनिया हरिद्वार में स्नान के लिए जावे है, नहीं तो वहां धरो ही का है ?"

भूरे ने लक्खू दादा की बात मानते हुए हरिमोहन से कहा, "अच्छा भाई, तुमको कुछ मालूम है कि गंगा की महिमा क्यों है ?"

"हां दादा, मालूम है"--इतना कहकर हरिमोहन ने गंगा की महिमा का बखान करना शुरू कर दिया, कहने लगा--

"भगवान् राम के वंशज राजा भगीरथ गंगाजी की पवित्र धारा को इस भूमि पर लाये थे। भगवान राम के वंशजों की कई पीढ़ियां गंगा को लाने में खत्म हो गईं, परंतु अंत में भगीरथ सफल हो गये। गंगाजी राम के समय में भी पूजनीय थीं। स्वयं भगवान राम ने बनवास के समय प्रयागराज में सीता और लक्ष्मण के साथ गंगा-स्नान किया था। गंगा हिमालय पहाड़ से निकलती है। इसके निकलने का

असली स्थान गोमुख है, पर सब लोग मानते हैं कि यह गंगोत्री से निकलकर पहाड़ों के बीच बहती हुई हरिद्वार में आती हैं।"

भूरे ने पूछा, "हमने सुना था कि गंगा शिवजी की जटाओं से निकली हैं!"

हरिमोहन ने उत्तर दिया, "कुछ लोग गंगाजी को शिवजी की जटाओं से निकला मानते हैं, परंतु मीठे पानी की यह धारा गंगोत्री की ओर से आती है। अपने-अपने विचारों के अनुसार लोग गंगा की महिमा का तरह-तरह से बखान करते हैं। किसी ने गंगा को पापनाशिनी माना है और किसी ने पुत्रों का मंगल करनेवाली। हमारे देश के अनेक महात्मा इसके तट पर अपना जीवन बिताते रहे। भगवान दत्तात्रेय ने भी हरिद्वार के कुशावर्त घाट के पास तप किया था। भर्तृहरि भी इस पवित्र स्थान में आये और बहुत समय तक गंगा का जल पीकर अपनी आत्मा को शुद्ध और पवित्र करते रहे।"

लक्खू ने कहा, "छोड़ो इसे, अब तुम हरिद्वार की महिमा सुनाओ।"

हरिमोहन ने कहा, "हरिद्वार का पुराना नाम मायापुरी है। मायापुरी के पांच मील के क्षेत्र को

पहले माया-क्षेत्र कहते थे। इस तीर्थ का नाम हजारों सालों से चला आता है। अपने देश के बड़े-बड़े राजा-महाराजा वहां गये। चीन देश का मशहूर यात्री हुवेनसांग भी वहां आया। मुगल बादशाहों के जमाने में इस नगरी का नाम बड़ा ऊंचा रहा। साधु-संतों ने भी वहां तपस्या की। इन साधु-संतों के दर्शन के लिए दूर-दूर से लोग आया करते थे और गंगाजी के किनारे पर उनके उपदेश सुना करते थे।"

किसीने पूछा, "क्या यह नगरी हमेशा से ऐसी ही थी?"

हरिमोहन ने कहा, "नहीं, किसी समय में वह गंगा के किनारे-किनारे एक सीधी पट्टी में बसी थी। धीरे-धीरे आदमियों की संख्या बढ़ती गई। उन्होंने यहां के पहाड़ों को कटवाकर बहुत-सी जगह निकलवाई। इस तरह इस नगरी का फैलाव हुआ। जब गंगा से नहर गंग निकाली गई, तब तो इसका और भी विस्तार हो गया। वहां का मौसम बड़ा सुहावना रहता है। इसलिए लोग बराबर आते-जाते रहते हैं। और अब तो राज्य-सरकार हरिद्वार को और भी बढ़ा देना चाहती है। कुछ समय पहले उसने हर की पौड़ी से कुछ दूर आगे बाजार की तरफ़ गंगा पर एक सुंदर पुल बनाया है।



गंगा के किनारे बसी हरिद्वार नगरी

दूसरी तरफ़ महकमा नहर की जमीन पर सुंदर-सुंदर पार्क बनाये हैं, फुलवाड़ी लगाई गई है, पुल के सिरे के पास में पक्का घाट बना दिया है, जिससे नहानेवालों को आसानी हो। यात्रियों के बैठने का भी प्रबंध किया गया है। अब वहां सुबह-शाम के समय घूमने-फिरने वालों की अच्छी रौनक रहती है। एक दिन तो हम भी उधर ही नहाये। घाट पर ही बैठकर हमने भोजन किया।"

लक्खू दादा ने कहा, "ये बातें तो हमने धन्नी से भी सुनी थीं। वह अपनी मां कूं हरिद्वार स्नान कराने ले

गया था। पारसाल की बात है। कह रहा था कि हरिद्वार तो अब शहर-सा हो गया है।"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, पहले वहां जितने लोग रहते थे, अब उससे दसगुने रहने लगे हैं। अब तो बारहों महीना ही वहां चहल-पहल रहती है।"

भूरे चौधरी ने कहा, "भैया, तुम नहाने की बात कह रहे थे। वहां से आगे का हाल सुनाओ।"

हरिमोहन ने कहा, "हां, हमने हर की पौड़ी पर स्नान किया। वहां एक विशाल कुंड है। इसे 'ब्रह्म-कुंड' भी कहते हैं। इस कुंड की बड़ी महिमा गाई गई हैं। इसका संबंध अमृत के घड़े से है। कहा जाता है, जब देवता और राक्षसों में लड़ाई हुई तो उन दोनों ने समुद्र को मथा। उसमें से अमृत का एक घड़ा निकला। उसके लिए दोनों ओर से छीना-झपटी हुई। इससे घड़े की एक बूंद ब्रह्मकुंड में भी पड़ गई। फिर क्या था, ब्रह्मकुंड इतना पवित्र माना जाने लगा कि वहां हर बारहवीं साल कुम्भ के स्नान का बहुत बड़ा मेला लगता है।"

अतरू ने हुक्का गुड़गुड़ाते हुए कहा, "कुम्भ का मेला तो प्रयाग में होता है। उन्हीं दिनों हरिद्वार में भी मेला होता होगा? सचमुच भैया, वह आदमी बड़े भाग्य

वाला होता है जो वहां जाकर स्नान कर पाता है। क्यों भैया, नहाने के लिए वहां घाट बने हैं क्या ?"

"दादा, वहां बहुत-से घाट हैं। सबसे पहले मैं घंटाघर के चबूतरे की बात बताऊंगा। यह चबूतरा इतना विशाल है कि इसपर हजारों आदमी आ सकते हैं। इसके घाटों पर चंदन लगानेवाले बड़ी-बड़ी छतरियां लगाये बैठे रहते हैं, जिनके नीचे यात्री अपने कपड़े रखकर आराम से बैठ सकते हैं। शाम को चबूतरे के दोनों ओर बैठकर मर्द, औरतों और बच्चों की टोलियां गंगा की धारा का आनंद लेती हैं।

"आगे कुछ सेवा-समितियों के दफ्तर हैं। ये समितियां यात्रियों की सेवा करती हैं। यह पक्का चबूतरा बहुत दूर तक चला गया है। इसका एक घाट 'सुभाष-घाट' कहलाता है। यहां सुभाष बोस की मूरती बनी हुई है। इस घाट पर कथा, कीर्तन और भजन खूब होते हैं। गर्मियों में हजारों लोग कथा सुनते हैं।

"पर दादा, तुमने जो यह बात कही कि कुम्भ का मेला प्रयाग में होता है, इन्हीं दिनों हरिद्वार में होता होगा—ऐसी बात नहीं है। प्रयाग में कुम्भ का मेला माघ के महीने में होता है और हरिद्वार में बैसाख के महीने में। बारह-बारह बरस के बाद इन तीर्थ-स्थानों

में कुम्भ-मेले लगते हैं। जब प्रयाग में मेला लगता है उस समय हरिद्वार में मेला नहीं लगता। इन दोनों मेलों के बीच तीन-तीन साल का अंतर रहता है और इन दोनों जगहों का महातम भी अलग-अलग है।"

भूरे चौधरी ने पूछा, "भैया, तुमने तो अपनी ताई को भी इस घाट पर कथा सुनवाई होगी ?"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, वह जगह ही ऐसी है कि वहां भगवान की कुछ चर्चा सुनने को मन चाहने लगता है। ब्रह्मकुंड के बीचों-बीच दो मंदिर बने हैं, जो गंगाजी के मंदिर कहलाते हैं। उन तथा दूसरे मंदिरों में रोज शाम को आरती होती है। उस समय की शोभा देखते ही बनती है। घाटों पर सैकड़ों-हजारों आदमी खड़े होकर उस दृश्य को देखते हैं। बहुत-से यात्री गंगाजी में दीये चढ़ाते हैं। पानी पर बहते हुए ये दीये बड़े अच्छे लगते हैं।"

हरिमोहन थोड़ी देर के लिए खो-सा गया, मानो आरती का दृश्य आंखों के सामने आ गया हो और घंटों की ध्वनि सुनाई दे रही हो। फिर चौंककर कहने लगा, "मैं सुभाष-घाट की बात कह रहा था, वहां से आगे 'गो-घाट' है। यहां पर पंडा प्रायश्चित कराता है। आगे कुशावर्त-घाट है। इस घाट की सारी

संपत्ति महारानी अहिल्याबाई ने दान की थी। इन घाटों के अलावा श्रवणनाथ घाट, विष्णु-घाट और गणेश-घाट भी बहुत मशहूर हैं।" श्रवणनाथ घाट के पास में श्रवणनाथ मंदिर भी है। इसे महात्मा श्रवणनाथ की याद में महन्त शान्तानंद ने बनवाया था। मंदिर के अंदर भगवान शंकर की ढाई फुट ऊंची कसौटी की पिण्डी है। इस मंदिर के पीछे की तरफ नन्दी की भी एक बड़ी मूर्ति है। इस मंदिर के पास एक दूसरा मंदिर भी है जो गंगा मंदिर नाम से मशहूर है।

"महात्मा श्रवणनाथ की एक गद्दी है। उसकी तरफ़ से घाट के पास में एक सुंदर भवन भी बना हुआ है। इस भवन में एक पुस्तकालय है। अख़बार पढ़ने का भी प्रबंध है। दशहरे के दिन यहां खूब भीड़ थी।

"ऐसे ही गणेशघाट के पास कई छोटे-छोटे मंदिर हैं। एक मंदिर में हनुमानजी की एक बड़ी मूर्ति है। जिस समय गंगाजी से नहर निकाली गई थी तो इसी घाट पर गंगा का पूजन किया गया था। यह घाट नहर के शुरू होने की जगह माना जाता है।"

अतरू चौधरी ने दुबारा हुक्का भरा और दम खींचते हुए कहा, "भैया, तुमने कहा था कि कुण्ड में गंगाजी के दो मंदिर हैं, वहां और भी मंदिर हैं क्या?"

हरिमोहन ने जवाब दिया, "दादा, हरिद्वार में बहुत-से मंदिर और मठ हैं। पहले मैं उन मंदिरों का हाल सुनाऊंगा, जो ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर बने हुए हैं। वहां के एक पहाड़ की चोटी का नाम है नील पर्वत। इसपर नीलेश्वर महादेव का मंदिर है। कहा जाता है कि भगवान शंकर के एक गण का नाम नील था। उसने शंकर की आराधना की। बाद में वहां महादेवजी का मंदिर बना, जो नीलेश्वर महादेव के नाम से पुकारा जाने लगा। इसकी यात्रा कुछ कठिन है, इसलिए वहांतक कम ही यात्री पहुंच पाते हैं।

"उसी पर्वत पर चंडीदेवी का मंदिर है। इस मंदिर को जम्मू के महाराज सरजीतसिंह ने १८२९ ई० में बनवाया था। इस मंदिर तक जाने के लिए दो रास्ते हैं। एक रास्ता गौरीशंकर महादेव मंदिर के पास से जाता है, दूसरा कामराज की काली के मंदिर के पास होकर जाता है। पहले रास्ते की चढ़ाई कठिन है। फिर भी यात्री उधर ही से जाते हैं और दूसरे रास्ते से लौटते हैं। लौटने में उनको गौरीशंकर, नीलेश्वर महादेव और नागेश्वर शिवमंदिर के दर्शन हो जाते हैं।

"चंडी-मंदिर के पास, पहाड़ के दूसरी तरफ हनुमान की माता अंजनीदेवी का मंदिर है। इस मंदिर से

नीचे की तरफ बेल के पेड़ों के बीच गौरीशंकर महादेव का मंदिर है, जिसपर यात्री गंगाजल चढ़ाते हैं।

"अब मैं आपको कनखल ले चलता हूं। कनखल गंगाजी के किनारे बसा है। यह हरिद्वार का ही एक भाग है। कनखल के पास गंगा की धारा को 'नीलधारा' कहते हैं। वहींपर दक्षेश्वर महादेव का मंदिर है। उस बारे में एक रोचक कथा है।

"दक्षप्रजापति की पुत्री सती का शिवजी से विवाह हुआ था। दक्ष अपने जमाई शिव से बहुत जलता था। एक बार उसने अश्वमेध यज्ञ किया। उसमें सभी देवताओं को बुलाया, परंतु शिवजी को छोड़ दिया। सती ने सोचा कि उसके पिता के घर यज्ञ हो रहा है तो उसे पहुँचना ही चाहिए। सो बिना न्यौते के सती अपने पिता के घर चली गई। जब राजा दक्ष ने शिवजी की बुराई की तो सती को बड़ा दुख हुआ और वह आग में भस्म हो गईं। जब शिवजी को पता चला तो वह वहां क्रोध में भरे आये। उनके गणों ने यज्ञ बिगाड़ दिया और दक्ष का सिर काट दिया। इसके बाद देवताओं ने शिव की स्तुति की। शिवजी प्रसन्न हुए तो उन्होंने दक्ष को जीवित कर दिया। इसके बाद विष्णु भगवान ने सती को भी जिला दिया। इस तरह से दक्षेश्वर महादेव

के मंदिर की स्थापना हुई। उसीके पास सती-ताल है।"

भूरे चौधरी ने कहा, "भैया, यह तो बड़ी मज़ेदार कहानी है, अब तुम और किसी जगह का हाल सुनाओ।"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, अभी कनखल का थोड़ा सा हाल और सुनलो। यहां सावन और भादों के महीने दक्षेश्वर मंदिर में बड़ी चहल-पहल रहती है। कनखल में महंतों के बड़े-बड़े मठ हैं। साधुओं की बड़ी-बड़ी गद्दियां हैं। यहां का निर्मला अखाड़ा तो बहुत ही मशहूर है। कुम्भ के अवसर पर नागा साधु यहीं पर जमा होते हैं। उनके कई-कई हाथी झूमते रहते हैं। यहीं से कुम्भ के मेले पर निकलनेवाली 'साही' के जलूस शुरू होते हैं। यहां के उदासी, निर्मला, निर्वाणी और निरंजनी चार अखाड़े बहुत प्रसिद्ध हैं। इन अखाड़ों के साथ लाखों रुपये की जायदादों का सम्बन्ध है। कुम्भ के मेले पर ये चारों अखाड़े धूमधाम के साथ अपनी-अपनी सवारियां निकालते हैं।

"कनखल के हरिहर आश्रम में एक बड़ा सुन्दर मंदिर अभी कुछ वर्ष पहले बना था, जो मृत्युंजय महादेव-मंदिर नाम से मशहूर है। इसमें मृत्युंजय की बड़ी सुन्दर मूर्ति है।

"श्रीकृष्ण-निवास आश्रम में भी एक मंदिर है जिसमें पातालेश्वर महादेव, लक्ष्मीनारायण, भगवान शंकर की मूर्तियां हैं। इनके अलावा पहले चार शिष्यों के साथ जगद्गुरु शंकराचार्य की मूर्तियां भी हैं। आश्रम में संत-महात्माओं के लिए रोजाना खाने-पीने का प्रबंध किया जाता है।

"कनखल में स्वामी रामतीर्थ-मिशन के भी अनेक भवन हैं। मिशन की ओर से रोगियों की चिकित्सा के लिए एक बड़ा अस्पताल भी चलता है।"

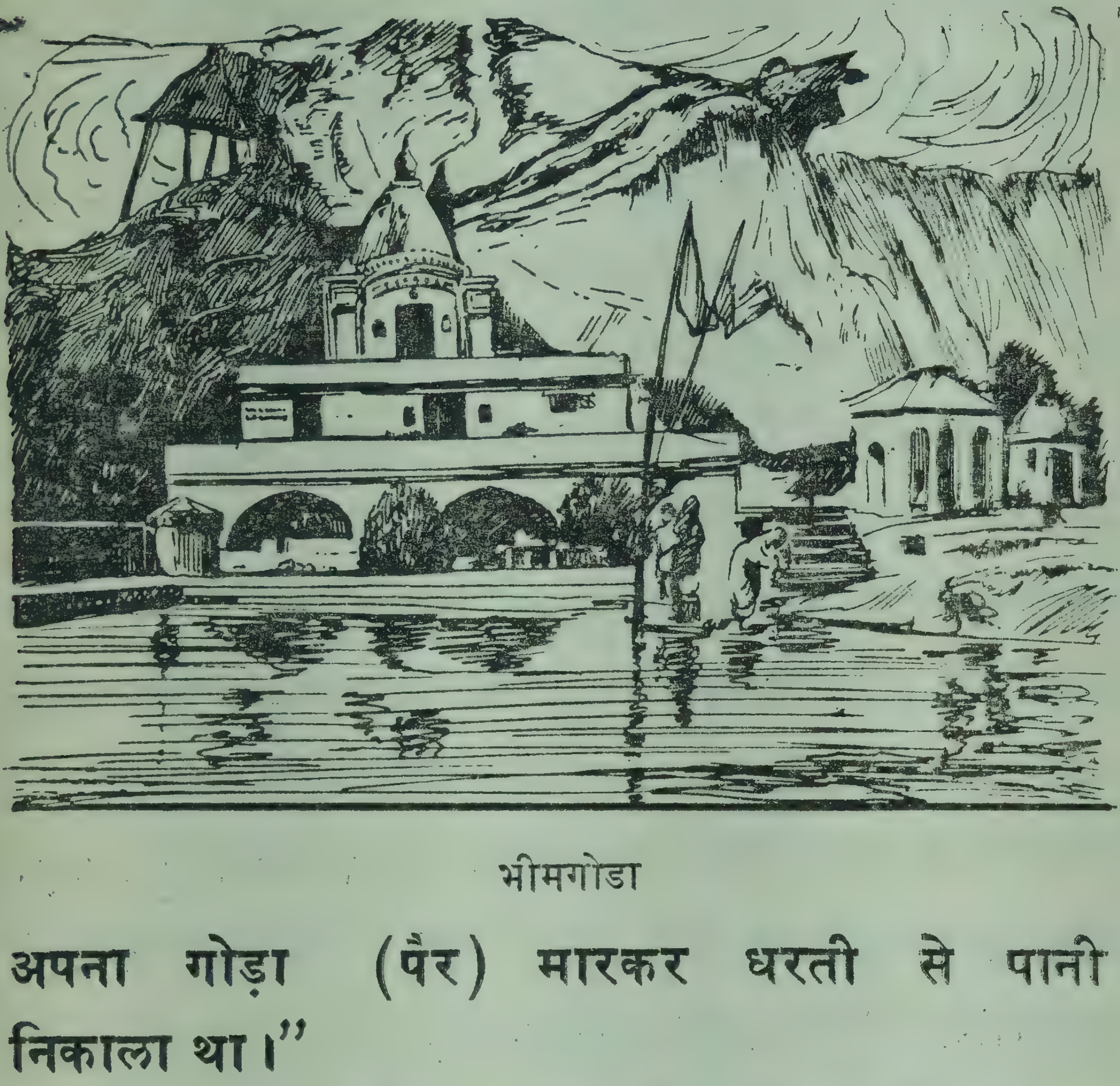
भूरे चौधरी ने कहा "अच्छा भैया अब कहीं और जगह की सैर कराओ।"

हरिमोहन ने फिर कहना प्रारंभ किया, "अच्छा दादा, चलो, अब मैं तुम्हें भीमगोड़ा घुमाऊं। भीमगोड़ा हर की पौड़ी से आगे की तरफ़ ऋषिकेश जानेवाली सड़क पर है। कहते हैं, यहां भीम ने तपस्या की थी। बहांपर एक पक्का कुंड है, जिसमें गंगा की धारा का जल आता है। यहां मंदिर भी बने हैं। भीमगोड़े के ताल में हजारों यात्री स्नान करते हैं।"

अतरू ने उतावली से प्रश्न किया, "क्यों भैया, ये भीमसेन तो महाभारत वाले हैं?"

हरिमोहन ने कहा, "दादा! उसी भीमसेन के

नाम पर यह ताल है। लोग कहते हैं कि भीम ने



भीमगोडा

अपना गोड़ा (पैर) मारकर धरती से पानी निकाला था।"

अतरू ने कहा, "वाह भाई, वाह, हमारे यहां भी कैसे-कैसे वीर थे कि लात मारकर पानी निकाल देते थे!"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, भीमगोड़े से आगे करीब दो मील दूर पर सप्तधाराएं हैं। कहा जाता है कि गंगाजी की इस स्थान पर सात धाराएं हो गई थीं। उन सात धाराओं पर सात ऋषियों ने तपस्या

की। उन सातों ऋषियों के नाम पर सात आश्रम बनवाये गए हैं। शिवजी का एक विशाल मंदिर भी है। यहां पर एक गोशाला भी है। आश्रमों में विद्वानों और साधु-महात्माओं के ठहरने आदि का भी प्रबंध है। यह आश्रम अब सप्त-ऋषि-आश्रम के नाम से मशहूर है।

"सप्त ऋषि आश्रम में एक गोशाला भी है। गौओं के रखने लिए मकान और झोंपड़ियां बना दी गई हैं। कथा-वार्ता के लिए एक बड़ा भवन बनाया गया है, जिसमें कई हजार स्त्री-पुरुष एक साथ बैठ सकते हैं। आश्रम की तरफ से आस-पास के रहने वालों के लिए इलाज का भी प्रबंध किया गया है। आश्रम में एक औषधालय खोल दिया गया है। यहां एक बड़ी यज्ञशाला भी बनाई गई। परमहंस स्वामी रामतीर्थ की मूर्ति भी दर्शनीय है।"

यहां की कथा को ज़ारी रखते हुए हरिमोहन ने बताया, "सप्त-ऋषि आश्रम से थोड़ी दूरी पर सत्य-नारायण का मंदिर है। इस मंदिर के पास में ही एक दूसरा मंदिर है, जो गरुड़ मंदिर नाम से मशहूर है। ऋषिकेश जानेवाले यात्री इन मंदिरों के दर्शनों का लाभ उठाते हैं। गरुड़ मंदिर के सामने एक कुण्ड भी है।

"यहां से जो यात्री ऋषिकेश जाना चाहते हैं वे

आगे चले जाते हैं और जो केवल सत्यनारायण मंदिर के दर्शनों को जाते हैं वे हरिद्वार लौट आते हैं।"

किसी ने पूछा, "क्यों भाई, हरिद्वार में खाने-पीने का क्या इंतजाम है ?"

भूरे ने कहा, "वाह चौधरी, यह तुमने खूब पूछा। अरे, वहां खाने-पीने का कोई टोटा थोड़े ही होगा। सब चीजें मिलती होंगी ?"

हरिमोहन ने कहा, "जो लोग एक दिन के लिए ही जाते हैं वे अपने घर से खाने-पीने का सामान ले जाते हैं। जिनको दो-चार दिन ठहरना होता है, वे धर्मशालाओं में बना लेते हैं। बाजार में सब सामान मिल जाता है। अच्छा यही है कि गर्म और ताजा खाना खाया जाय। वैसे बाज़ार में भी चावल, दाल, रोटी, पूड़ी आदि मिल जाती ह। अब तो बहुत-से होटल भी खुल गये हैं। तरह-तरह के फल भी मिल जाते हैं। इसलिए खाने-पीने की कोई परेशानी नहीं होती।"

अतरू ने ज्वालानाथ की ओर संकेत करते हुए कहा, "क्यों ज्वालानाथ, तुमने तो हरिद्वार की मिठाइयों का खूब आनंद लिया होगा ?"

ज्वालानाथ ने उत्तर दिया, "अजी, कुछ न पूछो। चार दिन बड़ी मौज रही।"

भूरे ने पूछा, "क्यों भैया, हरिद्वार में तो मेले भी बहुत-से होते रहते हैं। तुमने कुंभ मेले की बात कही थी।"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, वहां सबसे बड़ा मेला तो कुम्भ का होता है। इसमें हमारे देश के सभी हिस्सों से लाखों आदमी पहुंचते हैं। यह मेला बारहवें साल लगता है। गोघाट के सामने गंगा की दूसरी ओर नहरवालों का एक बहुत बड़ा मैदान है। इस मैदान में एक बड़ा नगर-सा बस जाता है। लोग दुकान लाकर बाज़ार लगाते हैं। नाटक और खेल-तमाशों की चहल-पहल रहती है। मेले की यह धूम दो हफ्ते तक रहती है। दूसरा मेला अर्द्ध-कुम्भी का भी इसी मैदान में होता है। इनके अलावा पूर्णमासी, अमावस्या, गंगा-दशहरा पर भी खूब भीड़ होती है और चंद्रग्रहण के मोकों पर भी मेले लगते हैं। जहां कुम्भ और अर्द्ध-कुम्भी के मेले लगते हैं, उस जगह को 'रोड़ीवाला टापू' कहते हैं।"

भूरे चौधरी ने कहा, "सुना है, कुम्भ पर हज़ारों साधु-महात्मा आते हैं और उनके हाथियों पर जलूस निकलते हैं। क्यों, यह ठीक है ?"

अतरू ने कहा, "चौधरी, साधुओं के अब क्या जलूस निकलेंगे ! कोई जमाना था जब साधु राजा-

महाराजाओं की तरह से अम्बारियों में बैठते थे। पर अब तो जमाना बदल गया। साधुओं को भला अब कौन पूछे है ?"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, ऐसी बात नहीं है। सरकार अभी तक साधुओं की पुरानी परंपरा को निभाती है। कुम्भ पर साधुओं के अखाड़े निकलते हैं। साधुओं के कई फिरके हैं। सब अपने-अपने ढंग से साज-सामान के साथ जलूस निकालते हैं। ये जलूस 'साही' कहलाते हैं। पहले नागा साधुओं के जलूस निकालने का नियम है। उसके बाद और साधु अपने-अपने जलूस निकालते हैं। सरकारी अफ़सर इन जलूसों का पूरा प्रबंध करते हैं। पुलिस भी काफ़ी साथ में रहती है, क्योंकि लाखों आदमियों की भीड़ को काबू में रखने का सवाल बड़ा होता है।"

भूरे चौधरी ने कहा, "वाह भैया, वाह! हमने तो कुम्भ के जलूस का घर बैठे ही आनंद ले लिया। अच्छा भैया, हरिद्वार में और क्या-क्या है ? सुना है, वहां एक गुरुकुल भी है ?"

हरिमोहन बोला, "दादा, मैं गुरुकुल की बात सुनाने ही वाला था। हरिद्वार में सबसे बड़ा गुरुकुल, कांगड़ी गुरुकुल के नाम से मशहूर है। अब तो यह

विश्वविद्यालय हो गया है । इसे हमारे देश के नेता स्वामी श्रद्धानंद ने स्थापित किया था । पहले यह गंगा के पार कांगड़ी गांव के पास था और अब कनखल के पास है । यहां के वेद-मंदिर, आयुर्वेद भवन, अस्पताल, बगीचे, छात्रावास देखने लायक हैं । इसमें हजारों विद्यार्थी ऊंची शिक्षा पाते हैं ।

"ज्वालापुर का महाविद्यालय भी पुराना गुरुकुल है । इसे स्वामी दर्शनानंद महाराज ने स्थापित किया था । यहां विद्यार्थियों की संस्कृत की मुफ्त पढ़ाई होती है ।

"हरिद्वार में कन्या गुरुकुल और ऋषिकुल भी है । ऋषिकुल के साथ आयुर्वेद ऋषिकुल कालिज भी चलता है ।"

भूरे चौधरी ने पूछा, "वहां का कोई और मंदिर तो नहीं रह गया ?"

हरिमोहन ने कहा, "दादा, हरिद्वार में मंदिरों की क्या कमी है ! कई पुराने मंदिरों का हाल मैं सुना चुका हूं । हां, एक नया मंदिर ऐसा है, जिसको देखकर मन प्रसन्न हो जाता है । इस मंदिर का नाम है—'गीता-भवन' । रेलवे स्टेशन से शहर की ओर जाते हैं तो चौराहे पर पहले भगवान मृत्युंजय की संगमरमर की

मूरती मिलती है। एक सुंदर फव्वारे के बीच यह मूरत बनी है। उसके सिर पर बराबर पानी गिरता रहता है। उससे कुछ दूर चलने पर एक पुल आता है। उसके पास से ही एक रास्ता गीता-भवन को जाता है। इसमें रोज सवेरे कथा होती है। गीता से संबंध रखनेवाले सुंदर-सुंदर चित्र इसमें हैं। भवन के एक हिस्से में कृष्ण की विशाल मूर्ति है। हां, एक मंदिर की बात बताना भूल गया था। वह है मनसादेवी का। शहर के बीच से वहां के लिए एक रास्ता जाता है। ऊंची पहाड़ी पर यह मंदिर बना है।"

लक्खू दादा ने पूछा, "भैया, हमने लछमन-झूले का नाम बहुत सुना है। कुछ उसका हाल भी तो बताओ ? "

हरिमोहन ने कहा, "दादा, लछमन-झूला हरिद्वार से काफी दूर है। वहां जाने के लिए पहले ऋषिकेश जाना होता है। हरिद्वार के नाम के साथ-साथ ऋषिकेश का भी नाम आता है। इसलिए वहां की भी कुछ कथा सुन लो।

"ऋषिकेश पहले साधु-महात्माओं के निवास की जगह थी, पर धीरे-धीरे वहां भी बस्ती बस गई और अब तो एक अच्छा कस्बा हो गया है। यहां भी बहुत-से

मंदिर हैं। कई बड़े-बड़े क्षेत्र हैं। बाबा कालीकमलीवालों का क्षेत्र बहुत विख्यात है। क्षेत्र के सैकड़ों कर्मचारी यात्रियों के प्रबंध के लिए नियत हैं। साधु-महात्माओं को मुफ्त भोजन दिया जाता है। यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला का प्रबंध है। बाबा कालीकमली-वाले की तरफ से गंगोत्तरी और बदरीनाथ के रास्तों में भी धर्मशालाओं का प्रबंध है।

"दूसरा बड़ा क्षेत्र पंजाबसिंध क्षेत्र के नाम से मशहूर है। इसमें हजारों यात्री एक साथ ठहर सकते हैं। इन दोनों के अलावा यहां और भी बहुत-सी धर्मशालाएं हैं। यहां गंगा का बड़ा सुन्दर घाट है। घाट के पास कई मंदिर बने हैं। गरमी के दिनों में घाट के पास कथा-वार्ता भी होती है।"

भूरे चौधरी ने चिलम में दम लगाते हुए कहा, "भैया, अब लक्खू दादा को लछमन-झूले का हाल भी सुना दो।"

हरिमोहन ने कहा, "चौधरीजी, ऐसी क्या जल्दी है? लछमन-झूला तो आपको भगवान राम की याद दिलावेगा। अच्छा सुनो। जब भगवान राम अपने भाई लछमन के साथ तप करने के लिए पर्वतों में गये तो इस स्थान पर लछमन ने तप किया। उनके नाम पर

लछमण-मंदिर बनाया गया। यहां से गंगा पार जाने के लिए जो पुल बना वह लछमन-झूला नाम से मशहूर हुआ। अब तो इस पुल के पास में काफी बस्ती बस गई है।

"गंगा के दूसरे किनारे पर गीता-भवन और स्वर्गाश्रम है। गीताभवन में श्रद्धालु यात्रियों के रहने का भी प्रबंध हे। गर्मियों में यहां खूब रौनक रहती है। स्वर्गाश्रम में साधु-महात्माओं के रहने व खाने-पीने का प्रबंध है। गंगापार आने-जाने के लिए आश्रम की तरफ से नाव भी चलती है।"

भूरे चौधरी ने कहा, "भैया, राम और लछमण तो पहाड़ों में ही मर-खप गये थे ?।"

"हां चौधरी ! यही कहा जाता है कि वे फिर नहीं लौटे। इसी तरह से पांचों पाण्डव भी इधर से पहाड़ों में गये थे और वे भी फिर कभी लौटकर नहीं आये।"

ऋषिकेश की कथा को जारी रखते हुए हरिमोहन ने बताया, "यहां स्वामी शिवानंद का आश्रम भी दर्शनीय है। आश्रम के साथ एक दवाखाना भी है। यहां कथा-वार्ता का भी प्रबंध है। बहुत से साधु-महात्मा यहां भी निवास करते है।"

भूरे चौधरी ने कहा, "भैया, अब तो हम खुद ही किसी मौके पर वहां की सैर करेंगे।"

हरिमोहन ने कहा, "जरूर जाइए, दादा ! बड़ी सुंदर जगह है । वहीं से हमारे देश की सबसे बड़ी गंग नहर निकाली गई है । सौ साल से भी ज्यादा हो गये, जब काटले नाम के एक अंग्रेज ने यह काम किया। हरिद्वार से दो मील ऊपर से यह नहर निकाली। इस नहर से लाखों बीघे भूमि की सिंचाई होती है और इसपर बहुत-से बिजलीघर भी बनाये गये हैं, जिनसे हमें बिजली मिलती है ।"

भूरे चौधरी ने कहा, "इसी नहर का एक बम्बा (रजबाहा) तो हमारे गांव के पास से जा रहा है। हमारी ईख को उससे ही पानी मिलता है ।"

हरिमोहन ने कहा, "बस अब एक बात और रह गई । वह है वहां का बाजार। बाजार में दोनों तरफ की दुकानों पर बड़ी भीड़ लगी रहती है। मेलों के दिनों में तो रास्ता चलना ही कठिन हो जाता है । दुकानों पर सब तरह की चीजें मिलती हैं। खिलौनों की तो भरमार रहती है। छपी साड़ियां भी खूब बिकती हैं। हरिद्वार का प्रसाद तो सब खरीदते ही हैं। तरह-तरह की शीतल-पाटियां, कूंडियां और कंठी-मालाएं मेले के दिनों में खूब बिकती हैं। छोटी-बड़ी सब चीजें बाजार में मिल जाती हैं।"

काफ़ी देर होगई थी, पर कोई भी जाने की जल्दी

में नहीं था। सब चाहते थे कि हरिद्वार के बारे में उन्हें पूरी जानकारी मिल जाय, कौन जाने कब वहां जाने का मौका मिल जाय, और न भी जाना हो तो भी तीरथों और अच्छी जगहों के हाल सुनकर खुशी तो होती है।

भूरे चौधरी ने कहा, "भैया, तुम भी खूब हो! सारी रामायण सुनादी, पर यह नहीं बताया कि वहां पहुँचते कैसे हैं?"

हरिमोहन ने कहा, "वहां मोटरें जाती हैं और रेल भी। जो जहां से जाना चाहें, अपना सुभीता देखलें।"

किसीने पूछा, "कोई बैलगाड़ी से जाना चाहे तो?"

इस सवाल पर सब हँस पड़े। हरिमोहन ने मुस्कराते हुए कहा, "पास की ही जगह से जाना हो तो बैलगाड़ी से जाने में हर्ज नहीं है, रखो बैलगाड़ी में सामान, खुद बैठो और चल दो। अपनी सवारी, जहां चाहो रोकलो। मोटर और रेल तो अपनी जगह पर ही रुकती हैं। लेकिन अगर दूर से जाना है तो फिर रेल या लारी से ही जाना होगा, पर सच बात तो यह है कि जो मजा पैदल चलने में आता है, वह सवारी पर हर्गिज. . ."

लक्खू ने बात काटते हुए कहा, "भैया, तुम्हारी बात ठीक है, हमारे पुरखा जब तीरथ करने जाते थे, तब पैदल ही जाते थे, पर अब जमाना बदल गया है। न किसीके पास इतना समय है और न देह में उतना कस। अब तो मोटर या रेल में बैठे और झट्ट पहुँच गये। क्यों, है न ?"

हरिमोहन ने कहा, "जिसको जैसा सुभीता हो, देख लेना चाहिए।"

भूरे चौधरी ने कहा, "वाह, भैया! वाह, तुमने तो यहीं बैठे तीरथ के दर्शन करा दिये। कितना सुंदर है हरिद्वार और कितनी मानता है उसकी!"

●

८२

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना